उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था में चारधाम यात्रा की भूमिका

नन्दलाल
असि0 प्रोफे0, भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय जखोली,
उत्तराखण्ड, भारत ।
prathamnandu.uk@gmail.com

डॉ0 अरूण कुमार सिंह
एसो0 प्रोफे0,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टिहरी,
उत्तराखण्ड, भारत ।

सारांश

चारधाम यात्रा को हिन्दू धर्म में विशेष स्थान प्राप्त है। इस महायात्रा में पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जहां गंगोत्री एवं यमुनोत्री को धरती पर ईश्वरीय साक्ष्य के रूप में तो केदारनाथ जी को भगवान शिव और बदरीनाथ जी को भगवान विष्णु का निवास स्थान माना गया है। इसीलिए इसे यात्रा नहीं अपितु जीवन दर्शनकहना अधिक तर्कसंगत होगा।

उत्तराखण्ड अपने घने वन, हरी–भरी वादियाँ, ऊँचे–ऊँचे हिम से ढके पहाड़, झरने, झील, सरोवर, ताल–तलैयों की प्राकृतिक सौन्दर्यता के कारण हमेशा आकर्षण का केन्द्र रहा है। तीर्थस्थल, देवालय, पवित्र धार्मिक स्थल, ऋषि–मुनि की तपस्थली के कारण इस पर्वतीय क्षेत्र को देवभूमि,देवस्थली, तपोभूमि आदि नामोंसे जाना जाता है।

चारधाम यात्रा को उत्तराखण्ड राज्य के आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण माना गया है। यहां पर सरकार के द्वारा बहुत महत्वाकांक्षी पर्यटन योजनाओं को ध्यान में रखते हुए बहुत से विशेषज्ञों के जरिये पर्यटन विकास की योजनाऐं बनायी जा रही हैं। इस श्रृंखला में चारधाम परिपथ महायोजना, वीर चन्द्रसिंह गढवाली पर्यटन स्वरोजगार योजना, होम स्टे योजना, मेरे बुजर्ग मेरे तीर्थ योजना आदि। यहाँ प्रत्येक वर्ष अप्रैल–मई में कपाट खुलते है और अक्टूबर – नवम्बर में बंद होते हैं। चारधाम यात्रा के लिए लाखों यात्री दर्शन के लिए आते हैं जिससे उत्तराखण्ड को अधिक आय प्राप्त होती है और स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्राप्त होता है। पर्यटन में चार धाम यात्रा से ही अधिकांश राजस्व प्राप्त होता है। अतः उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था में चार धाम यात्रा की महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तराखण्ड के गढवाल क्षेत्र में सुरम्य एंव हिमाच्छादित पहाडियों में चारधाम स्थित हैं। अगर यहां पर मूलभूत सुविधाओं का विकास किया जाय और यहां की संस्कृति का प्रचार–प्रसार किया जाय तो उत्तराखण्ड के आर्थिक विकास में चारधाम यात्रा से प्राप्त होने वाला राजस्व और अधिक बढ़ सकता है।

प्रस्तावना

भारतीय भूमि और विशेष रूप से गढ़वाल का अति प्राचीनकाल से धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व रहा है। यह भूमि सृष्टि के सृजन, पालन व संहार को करने वाले भगवान की सत्ता के कारण सदा से पवित्र मानी गयी है। यहां स्वयं भगवान शंकर एवं शक्ति का निवास

है। इसके साथ की ब्रह्मा और विष्णु आदि देवों को भी यहाँ लीला भूमि है। उत्तराखण्ड के गढ़वाल में ही चारधाम अवस्थित हैं। इस भू–भाग को केदारखण्ड के नाम से भी जाना जाता है। केदारखण्ड क्षेत्र के धार्मिक महत्व के सम्बन्ध में महाभारत , स्कन्द पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, देवी भागवत, वायु पुराण, वामन पुराण, ब्रह्मपुराण, कूर्म पुराण, शिव पुराण, मार्केण्डेय पुराण, मत्स्य पुराण, आनन्द रामायण और वाल्मीकि रामायण आदि ग्रन्थों में काफी रोचक गाथा में मिलती है। श्री बदरीनाथ जी को बैकुण्ठ धाम, माँ गंगोत्री को फलदायिनी,माँ यमुनोत्री को सूर्य पुत्री एवं श्री केदारनाथ जी को शिव का धाम के नाम से जाना जाता है

धार्मिक मान्यता के अनुसार चार धाम यात्रा हरिद्वार व ऋषिकेश से प्रारम्भ होती है। इन चार धामों की यात्रा मान्यता के अनुसार पश्चिम से पूर्व की ओर यमुनोत्री से गंगोत्री, श्री केदारनाथ एवं श्री बदरीनाथ की जाती है।

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड की चारधाम यात्रा का उत्तराखण्ड के आर्थिक विकास में योगदान का वर्णन किया गया है। उत्तराखण्ड में पर्यटन आय का प्रमुख स्रोत है, और इसमें भी उत्तराखण्ड के चारधाम यात्रा का विशेष महत्व है। प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड में चारधाम यात्रा का धार्मिक एंव ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्व के साथ–साथ इसके विकास के पहलु को भी इंगित करना प्रमुख उददेश्य है, जिससे उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था के विकास में तेजी लायी जा सके।

यहां की चारधाम यात्रा को सुचारू रूप से संचालित करने और सुलभ किस प्रकार बनाया जाय इसका अध्ययन करना भी प्रस्तुत शोध प्रत्र का उददेश्य है।

शोघ विधि

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक एंव समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन को परिपूर्ण करने हेतु प्राथमिक एंव द्वितीयक प्रकार के आंकडों का प्रयोग किया गया हैं। आंकडों के विश्लेषण के लिये अद्यतन साँख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया हैं तथा आवश्यकता अनुसार रेखाओं एंव मानचित्रों का प्रयोग भी किया गया हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य का गढवाल क्षेत्र है। गढवाल क्षेत्र के उत्तर में तिब्बत, पूरब में कुमाँऊ, पश्चिम में हिमाचल ओर दक्षिण में उत्तर प्रदेश है। इसका क्षेत्रफल 32449 वर्ग मीटर हैं। यह क्षेत्र 20 26′ से 31 8′ उत्तरी अक्षांश तथा 77 49′ से 80 6′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। गढवाल क्षेत्र में 7 जिले हैं जिसमें पौडी, चमोली, रूद्रप्रयाग, टिहरी, उत्तरकाशी, देहरादून और हरिद्वार हैं।

विश्लेषण एंव व्याख्या

प्राचीनकाल से ही यह प्रदेश धर्म प्रधान रहा है। हिन्दुओं के पवित्र स्थल बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री इसी भू–भाग के अन्तर्गत हैं।

यमुनोत्री धाम

यमुनोत्री पवित्र यमुना नदी का उदगम स्थल है तथा यहां पर यमुना देवी का प्रसिद्व मंदिर है। यमुना को यमराज की जुडवा बहन तथा सूर्य की बेटी भी माना गया है। यमुनोत्री जाने के लिये जानकीचटटी तक मोटर मार्ग तथा यहां से 5 किमी पैदल रास्ता तय करना पडता है। समुद्र तल से यह स्थल लगभग 3235 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है। मन्दिर के समीप गर्म पानी का तप्त कुण्ड है जिसे सूर्य कुण्ड के नाम से भी जाना जाता है। कुण्ड में यात्री कपडे में चावल एंव आलू पकाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। इसके कपाट अप्रैल/मई में खुलते हैं तथा 6 माह बाद अक्टूबर/ नवम्बर में बंद हो जाते हैं। यह निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश से लगभग 257 किमी दूर है तथा निकटतम हवाई अड्डा जौलीग्रान्ट है जो ऋषिकेश से 18 किमी दूरी पर स्थित है।

यमुनोत्री मार्ग पर धर्मशालाएं तथा होटल उपलब्ध हैं। जानकीचटटी में गढवाल मण्डल विकास निगम का पर्यटक आवास गृह एंव धर्मशालाएं तथा निजी होटल उपलब्ध हैं।

यमुनोत्री तीर्थ उत्तरकाशी जिले के खांई परगने के गीठ पटटी में स्थित है। यह तीर्थ स्थल उत्तरी अक्षांश 31 1′ तथा पूर्वी देशान्तर 78 28′ के मध्य में है जिस स्थान पर यमुना धरती पर उतरी, कालान्तर में वही स्थान यमुनोत्री कहलाया, वैसे यमुना जी का मूल उदगम स्थल यमुनोत्री से 6 किमी ऊपर कालिंदी पर्वत पर है। इस स्थान की ऊँचाई 4098 मी0 से भी अधिक है। इस मन्दिर के पुजारी खरसाली गाँव के उनियाल जाति के पुराहित हैं।

गंगोत्री धाम

माँ गंगा मन्दिर लगभग 3048 मी0 की ऊँचाई पर अवस्थित है जिसका निर्माण 18वीं शदी में हुआ। सफेद रंग की संगमरमर से बने इस मन्दिर की ऊँचाई 25 फीट है। गंगा का उद्गम स्थल गौमुख ग्लेशियर है जो गंगोत्री से 18 किमी पैदल मार्ग की दूरी पर स्थित है गंगोत्री राजा भगीरथी की तपस्थली भी है। उदगम से इसे भागीरथी नदी कहा जाता है जो संगम स्थल देवप्रयाग में आकर अलकनन्दा नदी से मिलकर गंगा कहलाती है।

उतरकाशी से 100 किमी पर अवस्थित गंगोत्री धाम हमारी संस्कृति, आस्था एवं विश्वास का केन्द्र है। गंगा ने स्वर्ग से उतरकर राजा भगीरथ के पूर्वजों का ही उद्धार नहीं किया बल्कि अनन्त काल से आज तक इस धरती को सींचकर हमारी इतनी बडीआबादी को नित्य नया जीवन प्रदान भी कर रही है। इसीलिए भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है–

स्रोतस्यास्मि जाहनवी –मै नदियों में गंगा हूँ।

गंगोत्री में ही भगीरथी की प्रार्थना पर गंगा अवतरित होकर उत्तरवाहिनी बनी। यह मन्दिर 20 फीट ऊँचा है।मन्दिर एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। मन्दिर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में है। सूर्योदय के समय स्वर्णिम किरणों से मन्दिर की आभा अति सुन्दर लगती है। मन्दिर के गर्भगृह में गंगा जी की पाषाण प्रतिमा है जो आभूषण धारण किये है। श्री गंगोत्री मन्दिर के कपाट वैसाख शुक्ल अक्षय तृतीय को खुलते हैं तथा दीपावली के एक दिन बाद अन्न कूट के दिन बन्द हो जाते हैं। इस दिन श्री गंगा जी की भोग मूर्ति को डोली में सजाकर प्राचीन मुखवा गाँव में

लाया जाता है। शीतकाल में यहीं पर इसकी पूजा होती है।

माँ गंगा के पुजारी मुखवा गांव के सेमवाल जाति के ब्राह्मण है। ग्रीष्मकाल में आस्था एवं विश्वास के प्रतीक गंगोत्री धाम में लाखों तीर्थयात्री माँ गंगा के दर्शन एवं अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए यहां पर आते हैं। गंगोत्री में अनेक धर्मशालाएं, आवास गृह रात्रि विश्राम हेतु उपलब्ध हैं। गंगोत्री तक सड़क मार्ग उपलब्ध है। गौमुख पैदल मार्ग पर भोजवासा में गढ़वाल मण्डल विकास निगम का पर्यटक आवास गष्ह है।निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश है जो यहां से लगभग 257 किमी की दूरी पर है और हवाई अड्डा जौलीग्रान्ट यहां से 275 किमी दूर है।

श्री केदारनाथ धाम

मन्दाकिनी नदी के किनारे समुद्र तल से लगभग 3584 मी0 की ऊँचाई पर स्थित यह मन्दिर ''शिव के धाम'' नाम से विख्यात है। भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक इस महाधाम में गंगोत्री से लाये जल से महादेव का जलाभिषेक किया जाता है आदिगुरू शंकराचार्य ने इस पावन भूमि पर भगवान शिव को संस्थापित किया, पौराणिक कथानुसार भगवान शिव ने इसी स्थान पर पांडवों को कौरवों की हत्यागत पाप से मुक्त किया।

स्वयं शंकर भगवान पार्वती जी से कहते हैं कि जैसे मैं प्राचीन हूँ, उसी प्रकार यह स्थान भी प्राचीन है। जब मै वाह्य मूर्ति को धारण करके सृष्टि की रचना करने में स्थित हुआ था, तब मै इसी स्थान में स्थित था। यह स्थान पवित्र एवं देवताओं को दुर्लभ है।

केदारनाथ का मन्दिर गढवाल मण्डल के रूद्रप्रयाग जनपद में हिमालय की गोद में अवस्थित है, जो स्थान पष्थ्वी के अक्षांश 30–44'–15'', देशान्तर 796'33'' के मध्य है।

केदारनाथ का मन्दिर विशाल है। इसे देखकर यह आश्चर्य होता है कि इस ऊँचाई पर इतना विशाल मन्दिर किस प्रकार बना दिया गया?केदारनाथ के पुजारी रावल हैं वे शैव समुदाय के मतावलम्बी हैं। केदारनाथ मे प्रातःकालीन भोगपूजा, अर्चना एवं श्रृंगार दर्शनीय होता है। इतना विधि –विधान शायद ही कहीं हो, केदारनाथ में अनेक कुण्ड विद्यमान हैं जिनका अपना आध्यात्मिक महत्व है। केदारनाथ धाम हेतु सोनप्रयाग तक बडे बाहनों, तदोपरान्त सोनप्रयाग से 5 किमी गौरीकुण्ड तक छोटे वाहनों यथा जीप/टैक्सी आदि से पहुँचा जा सकता है। इसके आगे की यात्रा लगभग 16 किमी पैदल वाया लिनचौली तक तय की जाती है। इस दूरी को घोड़ा /खच्चर/डण्डी/कंडी आदि से भी तय किया जा सकता है। विभिन्न स्थानों से केदारनाथ हेतु हैलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है। इसका यात्राकाल भी अप्रैल/मई से अक्टूबर /नवम्बर तक होता है।

यहां से निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश 234 किमी है तथा निकटतम हवाई अडडा जौलीग्रान्ट 251 किमी दूरी पर है। हालाँकि अगस्त्यमुनि, गुप्तकाशी एवं फाटा से भी यात्राकाल में हैलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध की जाती है।

श्री बद्रीनाथ

अलकनान्दा नदी के दाहिने तट पर 3133 मी0 की ऊँचाई पर नर व नारायण पर्वत की गोद में 'बद्रीवन' में अवस्थित श्री बद्रीनाथ धाम हिन्दुओं के सबसे पुराने तीर्थ स्थानो में से एक

है। 8वीं शदी में आदि शंकराचार्य द्वारा इस मन्दिर की स्थापना की गयी है। भगवान बद्रीनाथ के पुजारी दक्षिण भारत के नबूंदरीपादब्राहमण (रावल) होते हैं।

श्री बद्रीनाथ मन्दिर के अतिरिक्त यहां पर तप्तकुण्ड, नारदकुण्ड, शेषनेत्र, नीलकण्ठ शिखर, उर्वशी मन्दिर, ब्रह्मा कपाल, मातामूर्ति मन्दिर, भीमपुल,वसुधारा जलप्रयात आदि दर्शनीय स्थल हैं।

भारतवर्ष की याात्रा–परम्परा में केदारखण्ड में स्थित तीर्थस्थलों का अपना विशिष्ट स्थान है। स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल में बहुत तीर्थ हैं, किन्तु श्री बद्रीनाथजी के समान कोई तीर्थ न हुआ है और न होगा। यहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में यात्री आते है। इस धाम का यात्राकाल भी अप्रैल/मई से अक्टूबर/नवम्बर तक होता है। निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश यहां से 297 किमी तथा निकटतम हवाईअडडा जोलीग्रान्ट 315 किमी दूरी पर स्थित है। आवास हेतु श्री बद्रीनाथ में धर्मशालाएं, आश्रम ,होटल तथा गढवाल मण्डल विकास निगम का पर्यटक आवास गृह उपलब्ध है।

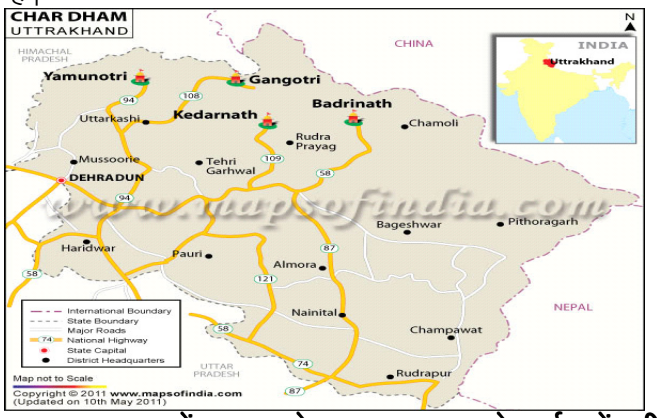

जनपद रूद्रप्रयाग में 2010 से 2017 तक आये पर्यटकों की संख्या

क्र.सं.	वर्ष	देशी	विदेशी	योग
1	2010	804770	648	805418
2	2011	1034379	1960	1036339
3	2012	1210160	1398	1211558
4	2013	727000	410	727410
5	2014	136681	3456	130137
6	2015	350537	1554	352091
7	2016	617736	803	618539
8	2017	954856	1583	956439

स्रोत–जिला पर्यटन कार्यालय जनपद रूद्रप्रयाग

जनपद चमोली में 2010 से 2017 तक आये पर्यटकों की संख्या

क्र.सं.	वर्ष	देशी	विदेशी	योग
1	2010	3265521	3323	3268844
2	2011	3422839	3782	3426621
3	2012	3094636	2715	3097551
4	2013	1075061	1121	1076182
5	2014	431880	856	432736
6	2015	730874	1046	731920
7	2016	1211803	3054	12144857
8	2017	1701360	4681	1706041

स्रोत – जिला पर्यटन कार्यालय गोपेश्वर चमोली

जनपद उत्तरकाशी में 2010 से 2017 तक आये पर्यटकों की संख्या

क्र.सं.	वर्ष	देशी	विदेशी	योग
1	2010	1212997	3455	1216452
2	2011	1582437	3458	1585895
3	2012	1491046	3314	1494360
4	2013	731515	1675	733190
5	2014	296293	1154	297447
6	2015	566618	2860	569478
7	2016	771481	4076	77557
8	2017	1135129	3243	1138372

स्रोत–जिला पर्यटन कार्यालय उत्तरकाशी

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड में पर्यटन में धार्मिक पर्यटन अथवा तीर्थाटन का विशेष महत्व है। इन तीनों जिलों के अतिरिक्त इन जिलों के मार्गों मे पड़ने वाले पर्यटक स्थलों को भी शामिल किया जाय तो पर्यटको की संख्या निश्चित रूप से अधिक होगी। इसके अतिरिक्त चारधाम यात्रा को सुदृढ़ करने के लिए यहाँ पर मूलभूत सुविधाओं सड़क, यातायात, चिकित्सा सुविधाएँ, होटल, पेट्रोल पम्प, हेलीकाप्टर सेवा आदि को विकसित किया जाना चाहिए ताकि पर्यटन को आधुनिक रूप दिया जा सके और अधिक से अधिक रोजगार दिया जा सके जिससे प्रतिव्यक्ति आय एवं राज्य की आय में वृद्धि हो सके। यहाँ के प्राकृतिक एवं रमणीक नैसर्गिक दृश्यों को आधुनिक सुविधाओं से युक्त किया जाना चाहिए जिससे उत्तराखण्ड़ का पर्यटन उद्योग विश्व पटल पर आ सके।

निसन्देह उत्तराखण्ड़ में चारधाम यात्रा से ही यहाँ के पर्यटन को बढावा मिला है साथ ही पर्यटन में केदारनाथ बदरीनाथ एवं गंगोत्री –यमुनोत्री प्रमुख धार्मिक स्थल हैं। जिससे प्रतिवर्ष सरकार को काफी मात्रा में राजस्व की प्राप्ति तो होती है साथ ही यहाँ के लोगों को बड़े पैमाने पर रोजगार भी मिलता है। 2013 में आयी केदारनाथ आपदा ने यहाँ के जन–जीवन को बहुत प्रभावित किया। इससे उत्तराखण्ड़ की अर्थव्यवस्था बुरी तरह चरमरा गयी थी। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चारधाम यात्रा उत्तराखण्ड़ की अर्थव्यवस्था की धुरी है।

सन्दर्भ

1. शाह सरिता, 2004:– *उत्तरांचल में आध्यात्मिक पर्यटन मन्दिर एवं तीर्थ,'* डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रा0)लि0×–30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली।
2. शर्मा, संजय कुमार,2005:– *'पर्यटन में भूगोल,'* तक्षशिला प्रकाशन 98 ए, हिन्दी पार्क दरियागंज, नई दिल्ली ।
3. शाह, सरिता एवं शाह गिरिराज, 2004:–*'परिक्रमा उत्तराखण्ड़,'* डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0 –30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली।
4. बलोदी, राजेन्द्र प्रसाद, 2008:–*'उत्तराखण्ड़ समग्र ज्ञानकोश,'* विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, डिस्पेन्सरी रोड़ देहरादून ।
5. नेगी, जगमोहन, 2007:–*'पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त,'* तक्षशिला प्रकाशन 98 ए, हिन्दी पार्क दरियागंज, नई दिल्ली,।
6. मेहरा, सुरेन्द्र सिंह 2014:–' *उत्तरकाशी एक अध्ययन,'* डिस्पेन्सरी रोड़ देहरादून।
7. रावत शिवराज सिंह निःसंग' 2006:–*'केदार हिमालय और पंचकेदार,'* विनसर पब्लिशिंग कम्पनी कैनाल रोड़ जाखन देहरादून।
8. *चारधाम एवं हेमकुण्ड साहिब,* यात्रा दिग्दर्शिका एवं सूचना निदर्शिनी।